नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

विश्व शांति के लिए खतरा बनते ट्रंप!

बुधवार को स्विट्जरलैंड के दाओस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच का मंच आमतौर पर वैश्विक सहयोग, मुक्त व्यापार और बहुपक्षीय संवाद का प्रतीक माना जाता है. लेकिन इस बार यही मंच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ऐसे बयानों का साक्षी बना, जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया. ग्रीनलैंड को लेकर ट्रंप की आक्रामक और उपनिवेशवादी सोच ने न केवल यूरोप को असहज किया, बल्कि वैश्विक शांति और अंतरराष्ट्रीय नियम आधारित व्यवस्था पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए. ट्रंप द्वारा ग्रीनलैंड को 'बर्फ का एक टुकड़ा' कहना अपने आप में उनकी मानसिकता को उजागर करता है. यह बयान केवल शब्दों की असावधानी नहीं, बल्कि उस दृष्टिकोण का संकेत है, जिसमें भूगोल, जनता और संप्रभुता को महज रणनीतिक संपत्ति की तरह देखा जाता है.

ग्रीनलैंड कोई निर्जन जमीन नहीं, बल्कि डेनमार्क के अधीन एक स्वशासी क्षेत्र है, जिसकी अपनी जनता, संस्कृति और राजनीतिक पहचान है. किसी भी लोकतांत्रिक नेता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह संप्रभु राष्ट्रों और क्षेत्रों के प्रति सम्मान का भाव रखे, न कि सौदेबाजी की भाषा बोले. ट्रंप का यह कहना कि वह सैन्य बल का प्रयोग नहीं करेंगे, पहली नजर में आश्वस्त करने वाला लगता है. लेकिन इसी के साथ यह जोड़ देना कि 'अगर मैं अत्यधिक शक्ति का इस्तेमाल करता तो कोई मुझे रोक नहीं सकता था', असल चिंता की वजह है. यह बयान स्पष्ट करता है कि बल प्रयोग का विकल्प उनके दिमाग में मौजूद है. यही सोच विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा है. इतिहास गवाह है कि जब भी किसी महाशक्ति ने अपनी सैन्य क्षमता को नैतिकता से ऊपर रखा है, दुनिया को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी है.डेनमार्क को 'कृतघ्न' कहना और यह चेतावनी देना कि 'आप ना कहेंगे तो हम इसे याद रखेंगे', ट्रंप की कूटनीति को व्यापारिक धमकी और राजनीतिक दबाव में बदल देता है. यह भाषा किसी वैश्विक नेता की नहीं, बल्कि किसी दबंग कारोबारी की लगती है. अंतरराष्ट्रीय संबंधों में स्मृति के नाम पर प्रतिशोध की धमकी देना बहुपक्षीय व्यवस्था को कमजोर करता है और छोटे देशों में असुरक्षा की भावना पैदा करता है.

टैरिफ की धमकी को फिलहाल टाल देना भी किसी उदारता का संकेत नहीं, बल्कि दबाव की रणनीति का हिस्सा है. ट्रंप का रिकॉर्ड बताता है कि आर्थिक हथियार उनके लिए राजनीतिक लक्ष्यों को हासिल करने का पसंदीदा साधन रहे हैं. दाओस जैसे मंच पर इस तरह की बयानबाजी यह दर्शाती है कि अमेरिका का नेतृत्व सहयोग से ज्यादा नियंत्रण और प्रभुत्व की भाषा बोल रहा है. ग्रीनलैंड को बार-बार आइसलैंड कह देना भले ही सोशल मीडिया के लिए मीम्स का विषय बन गया हो, लेकिन यह भी इस बात का प्रतीक है कि ट्रंप जैसे नेता जटिल अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को कितनी सतही समझ के साथ देखते हैं. जब ऐसी समझ के साथ दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य और आर्थिक शक्ति का नेतृत्व किया जाए, तो खतरा स्वाभाविक है.

दरअसल,आज दुनिया पहले ही यूक्रेन युद्ध, मध्य पूर्व के तनाव और एशिया-प्रशांत क्षेत्र की अनिश्चितताओं से जूझ रही है. ऐसे समय में ट्रंप की यह बयानबाजी वैश्विक शांति के लिए नई चुनौतियां खड़ी करती है. ग्रीनलैंड का मुद्दा केवल एक द्वीप का नहीं, बल्कि उस सोच का है जो ताकत को अधिकार समझती है. यदि यही सोच वैश्विक नेतृत्व की दिशा तय करेगी, तो आने वाले वर्षों में दुनिया और अधिक अस्थिर, असुरक्षित और विभाजित होती दिखाई देगी.

वसंत पंचमी : ज्ञान की साधना का महापर्व

प्रो. विवेकानंद तिवारी

> पुराणों में माता सरस्वती को भगवान ब्रह्मा की मानस पुत्री और शक्ति माना गया है. वे सृष्टि के निर्माण में ब्रह्माजी को ज्ञान, विवेक और सृजन शक्ति प्रदान करती हैं. इसलिए उन्हें ब्रह्माणी भी कहा जाता है. देवी भागवत और स्कंद पुराणों में माता सरस्वती को माया से मुक्त करने वाली शक्ति कहा गया है. संपूर्ण संस्कृति की देवी के रूप में दूध के समान श्वेत रंग वाली सरस्वती के रूप को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है. माँ सरस्वती का वाहन हंस है, जो विवेक का प्रतीक है, जो दूध और पानी को अलग कर सकता है. यह संकेत देता है कि उनका वाहन साधक को सत्य और असत्य में भेद करना सिखाता है. माता सरस्वती का वीणा धारण करना बताता है कि नाद (ध्वनि) ही ब्रह्म तक पहुँचने का माध्यम है. मंत्र-जप, भजन, कीर्तन और स्वाध्याय, ये सभी सरस्वती तत्व को जाग्रत करते हैं और साधक को आंतरिक आनंद की अनुभूति कराते हैं.

यह पर्व केवल एक तिथि विशेष नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, आध्यात्म, विद्या और कला के संगम का उत्सव है.धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से वसंत पंचमी का सबसे अधिक महत्व विद्या की देवी माँ सरस्वती के पूजन के कारण है. वसंत के आते ही प्रकृति मानो अपनी पुरानी, सूखी केंचुली को त्यागकर नव-वधू की तरह श्रृंगार करती है. कड़ाके की ठंड की विदाई होती है और सूर्य की किरणें शरीर में सिहरन के बजाय गर्माहट भरने लगती हैं. खेतों में सरसों के पीले फूल ऐसे लहराते हैं मानो धरती ने पीतांबर ओ लिया हो. पेड़ों पर नई कोपलें आने लगती हैं, आम की मंजरियों की महक वातावरण को सुगंधित कर देती है और कोयल की कूक मन को आनंदित कर देती है.

यह वह समय है जब प्रकृति और पुरुष दोनों में नई ऊर्जा का संचार होता है. वैदिक काल में भी विद्या की प्राप्ति के लिए सरस्वती की उपासना की जाती रही है.वेदों में माँ सरस्वती को ब्रह्मज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माना गया है. बौद्धधर्म की महायान शाखा में सरस्वती, आर्यतारा एवं भारती को अभिन्न मानते हुए उनकी उपासना की जाती रही है.

108 उपनिषदों में सरस्वती से सम्बद्ध उपनिषद् भी उपलब्ध है. इसका उेख मुक्तिकोपनिषद् में कृष्ण-यजुर्वेद से सम्बद्ध 32 उपनिषदों के साथ किया गया है. इस सरस्वतीरहस्योपनिषद् में देवी सरस्वती को ब्रह्म की शक्ति तथा चारों वेदों का एक मात्र प्रतिपाद्य माना गया है. श्रावस्ती के सहेत-महेत से प्राप्त 1219-20 ई. का एक बौद्ध शिलालेख में एक ही श्लोक में तारा और भारती (सरस्वती) की स्तुति की गयी है.

जैन धर्म में भी सरस्वती को भगवान् महावीर की वाणी से तुलना की गयी है.जैन सरस्वती के चार हाथों में कमल, माला, पुस्तक एवं कमण्डलु हैं. जैन विद्वानों ने शास्त्रों की रचना करते समय आरम्भ में सरस्वती, शारदा, वाग्देवी एवं ब्राह्मी आदि नामों से सरस्वती की स्तुति की है. कालिदास के प्रसिद्ध नाटक मालविकाग्निमित्रम् में सरस्वती को संगीत एवं नृत्यकला की देवी के रूप में प्रतिष्ठा मिली है. योग और वेदांत में बसंत पंचमी को नई साधना की शुरुआत का श्रेष्ठ समय कहा गया है. इस दिन किया गया मंत्र-जप, ध्यान या अध्ययन मन को स्थिर करता है, एकाग्रता बढ़ाता है और साधक को दीर्घकालीन आध्यात्मिक लाभ देता है. इसी कारण कई आश्रमों और गुरुकुलों में इसी दिन विद्यारंभ संस्कार होता है.

बसंत पंचमी के अवसर पर माता सरस्वती की पूजा भी होती है. बसंत पंचमी के दिन माता सरस्वती की पूजा करने का अर्थ है मन, बुद्धि और चित्त को शुद्ध करना, वाणी को संयमित करना और आंतरिक अज्ञानता का विसर्जन करना. लेकिन माता सरस्वती का स्थान केवल छात्रों के जीवन में ही नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में होनी चाहिए क्योंकि वो ज्ञान, विवेक और वाणी की शुद्धता प्रदान करने के साथ-साथ अहंकार, भ्रम और अज्ञानता का नाश भी करती है. जब बसंत पंचमी आता है, तो यह तिथि शीत ऋतु की जड़ता से निकलकर जीवन में नवचेतना, सृजन और ज्ञान का प्रवेश करती है. इसी कारण इसे माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस से भी जोड़ा जाता है. जैसे बसंत पंचमी में प्रकृति में पेड़-पौधे फिर से जीवंत होने लगते हैं, वैसे ही इस अवसर पर माता सरस्वती की पूजा साधक के भीतर विचारों की शुद्धि, चेतना का विस्तार और ज्ञान का अंकुरण लाता है.

ऋग्वेद में माता सरस्वती का उल्लेख नदी और देवी, दोनों रूपों में मिलवेदों में माँ सरस्वती को ब्रह्मज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माना गया है. योग और वेदांत में बसंत पंचमी को नई साधना की शुरुआत का श्रेष्ठ समय कहा गया है. इस दिन किया गया मंत्र-जप, ध्यान या अध्ययन मन को स्थिर करता है, एकाग्रता बढ़ाता है और साधक को दीर्घकालीन आध्यात्मिक लाभ देता है. इसी कारण कई आश्रमों और गुरुकुलों में इसी दिन विद्यारंभ संस्कार होता है. बसंत पंचमी के अवसर पर माता सरस्वती की पूजा भी होती है. बसंत पंचमी के दिन माता सरस्वती की पूजा करने का अर्थ है मन, बुद्धि और चित्त को शुद्ध करना, वाणी को संयमित करना और आंतरिक अज्ञानता का विसर्जन करना. लेकिन माता सरस्वती का स्थान केवल छात्रों के जीवन में ही नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में होनी चाहिए क्योंकि वो ज्ञान, विवेक और वाणी की शुद्धता प्रदान करने के साथ-साथ अहंकार, भ्रम और अज्ञानता का नाश भी करती है.

महाकौशल की डायरी

संवेदनशील क्षेत्र में टल गई अनहोनी...

अविनाश दीक्षित

जबलपुर में राजनैतिक जंग का मुख्य अखाड़ा व संवेदनशील माने जाने वाले क्षेत्र में अनहोनी उस वक्त टल गई जब शहर में बढ़ रहे अपराधों के खिलाफ कांग्रेसियों के बड़े समूह ने भाजपा के पूर्व विधायक अंचल सोनकर के बेटे राजा सोनकर की गुस्ताखी को नजरअंदाज कर दिया.

हुआ यूं कि कांग्रेसियों का काफिला एसपी ऑफिस तरफ जा रहा था कि तभी रास्ते में मौजूद भाजपा के पूर्व विधायक के बेटे राजा सोनकर ने हाथ में पिस्टल दिखाते हुए कांग्रेसियों को चुनौती दे डाली. इसका एक वीडियो भी वायरल हुआ जिसमें एक अन्य महिला हाथ में चप्पल दिखाते हुए नजर आई. मामले में हालांकि पुलिस ने राजा सोनकर के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज कर ली है. राजनैतिक गलियारों में इसको लेकर चर्चाएं थीं कि अपराधों के खिलाफ जहां कांग्रेसी प्रदर्शन कर रहे हैं तो वहीं दूसरी तरफ सत्ताधारी पार्टी के पूर्व विधायक के बेटे पिस्टल चमकाकर नैतिकता को कठघरे में खड़े करते नजर आ रहे हैं.

खबर है कि भाजपाई पूर्व विधायक के बेटे राजा सोनकर ने अपने बचाव में एक आवेदन एसपी को सौंपा है जिसमें उसने सफाई देते हुए कहा है कि कांग्रेसियों की भीड़ उसके घर तरफ आते हुए उसके पिता को गाली दे रही थी, तभी उसके हाथ में खिलौने वाली बंदूक थी और इसी के जरिए उसने कांग्रेसियों को रोकने का प्रयास किया. ये कहानी तो रची गई लेकिन वैसी नहीं रची गई कि राजा के खिलाफ एफआईआर दर्ज न हो सके. पूर्व क्षेत्र विधानसभा की तासीर जानने वालों की मानें तो अगर राजा की इस

करतूत को कांग्रेसियों द्वारा गंभीरता से लिया जाता और कांग्रेसियों की रैली में इतनी बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं की भीड़ थी कि वो अगर अपार्टमेंट में घुसती तो किसी बड़ी घटना से बिल्कुल भी इंकार नहीं किया जा सकता था. राजनैतिक विश्लेषक इसे शांति की दृष्टि से अच्छा मान रहे हैं कि कांग्रेसियों की भीड़ ने इसे ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया.

माननीयों की संवेदनशीलता पर सवाल

बीते दिनों बरेला थाना क्षेत्र अंतर्गत सिगमा कान्हा कॉलोनी सालीवाड़ा के पास नेशनल हाईवे में रोड किनारे खाना खा रहे 5 मजदूरों को कार से कुचलकर मौत के घाट उतारने की हृदयविदारक घटना को लेकर जिले के राजनैतिक गलियारों में अलग चर्चाएं हो रहीं हैं. बतकही है कि लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह, स्थानीय विधायक सुशील इंदु तिवारी और सांसद आशीष दुबे तीनों जबलपुर के ही निवासी हैं और घटना स्थल की दूरी भी कुछ ज्यादा भी नहीं थी बावजूद इसके तीनों में से कोई भी मृतकों के परिजनों को सांत्वना देने नहीं पहुंचा जबकि घटना के दूसरे दिन भी घटना स्थल में शव रखकर उग्र प्रदर्शन तक किया गया और मांग की गई थी कि सभी मृतकों के परिजनों को 25-25 लाख रुपए मुआवजा राशि दी जाए, सरकारी नौकरी देने और आरोपी चालक की गिरफ्तारी जल्द की जाए.

अफसरों को करना पड़ी मिन्नतें ....

महाकौशल के प्रमुख शहर सिवनी में एक ऐसा मामला सामने आया जिसने स्थानीय प्रशासन के साथ पुलिस मुख्यालय तक हड़कंप मचा दिया. हुआ यूँ कि पॉक्सो एक्ट के 3 कैदी सिवनी जेल की करीब 20 फीट ऊंची दीवार फांदकर फरार हो गए और जेल में तैनात सुरक्षा कर्मियों को जरा भी भनक तक नहीं लगी. खबर जैसे ही प्रशासनिक गलियारों में आग की तरह फैली तो जेल प्रशासन की व्यवस्था कटघरे में खड़ी हो गई. उच्च अधिकारियों की फटकार के बाद आनन-फानन में जेल प्रशासन ने स्थानीय पुलिस प्रशासन की मदद से फरार कैदियों के परिजनों से संपर्क साधा और उनसे तमाम मिन्नतें कर कहा कि कैदियों को आप लोग वापस जेल में दाखिल करवा दीजिए. इसके बाद परिजनों ने प्रशासन की मदद की और जेल से फरार हुए अपनों को खुद ही खोजकर जेल प्रशासन के सुपुर्द किया. इसके बाद तीनों कैदियों को दोबारा जेल में दाखिल कराया गया. चर्चाएं ये हैं कि अगर परिजन प्रशासन का साथ न देते तो कैदियों तक पहुंच पाना मुश्किल था. अपनों को दोबारा जेल में भेजते वक्त परिजनों की आंखें नम थीं, लेकिन जेल की सुरक्षा पर सवाल बरकरार है. खबर है कि जेल प्रशासन लापरवाह सुरक्षा कर्मियों का पता लगाने की डुगडुगी बजाने में जुट गया है.

गुटखा की लत का आखिर क्या इलाज

वैधानिक चेतावनी और कैंसर के खतरे के प्रति आगाह करने के बावजूद देश में बड़ी तादाद में लोग तंबाकूजन्य पदार्थ या गुटखा का सेवन करते हैं. शहरों में इसकी बहुतायत है लेकिन ग्रामीण भारत में 40 प्रतिशत गरीब परिवार भी अपनी मासिक आय का 4 प्रतिशत गुटखा पर खर्च करते हैं. मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में गुटखा सेवन बहुत ज्यादा है. मध्यप्रदेश में हर 10 में से 6 परिवार तथा यूपी में 50 प्रतिशत लोग गुटखा या खैनी के सेवन के आदी हैं. पूर्वोत्तर राज्यों में भी यह लत काफी फैल गई है. कर्नाटक में हर 4 में से 1 घर में गुटखा चबानेवाला मिल जाएगा. देश की 41 प्रतिशत ग्रामीण आबादी इसका सेवन करती है. स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार देश में तंबाकू के सेवन से प्रति वर्ष 13 लाख लोगों की मौत होती है. लोग शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषक खाद्य की बजाय गुटखा सेवन पर ज्यादा रकम खर्च करते हैं. सामाजिक सुरक्षा व जनस्वास्थ्य के लिए प्रतिबद्ध सरकार के लिए गुटखा की लत बड़ी चुनौती है. इसमें गरीबों की गरीबी और बढ़ती है. कुछ लोगों की 40 फीसदी आय इस व्यसन में खर्च हो जाती है. 2023 में तंबाकू उत्पादनों की वजह से सरकार को केवल 2.4 प्रतिशत टैक्स आमदनी हुई. केंद्रीय आबकारी संशोधन विधेयक 2025 में तंबाकू पर ड्यूटी व लेवी बढ़ाई गई है परंतु इससे क्या होगा ? टीवी पर धड़ल्ले से गुटखा व पानमसाला के विज्ञापन दिखाए जाते हैं जिनमें फिल्म अभिनेता प्रचार करते हैं. केसरयुक्त बताना तो सरासर धोखाधड़ी है. केसर इतनी महंगी है कि पान मसालों में मिलाई ही नहीं जा सकती. गुटखा सेवन करनेवाले सड़कों, दीवारों, सीढ़ियों, सुंदर इमारतों, स्मारकों, अदालत के परिसर, सार्वजनिक भवनों व पार्क को पीक की पिचकारी मारकर गंदा करते हैं. उनमें यदि कोई टीबी का मरीज हुआ तो न जाने कितने लोगों तक बीमारी फैला सकता है. ऐसे लोग मार्बल के फर्श और आफिस की दीवारों पर भी पीक थूकने से बाज नहीं आते. सिंगापुर या दुबई में कोई ऐसा करे तो भारी जुर्माना अदा करने के साथ जेल की हवा खाने की नौबत आ सकती है. पता नहीं देश में लोग कब सुधरेंगे?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

हमारी संस्कृति पर न करे कोई शक गरिमा का चिन्ह माथे का तिलक

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, लंदन के विकर ग्रीन प्राइमरी स्कूल में एक 8 साल के बच्चे को तिलक लगाने की वजह से स्कूल छोड़ना पड़ा. स्कूल स्टाफ ने बच्चे से तिलक लगाने की वजह बताने और उसकी धार्मिक प्रथा को जस्टीफाई करने या उचित ठहराने को कहा. बच्चे को लगातार निगरानी में रखा गया जिससे वह सदमे में आ गया. यह कितना बड़ा भेदभाव है?'

हमने कहा, 'अज्ञानी अंग्रेज क्या जानें कि भारत की धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा में तिलक का कितना महत्वपूर्ण स्थान है. जन्मदिन पर तिलक लगाकर दीर्घायु की कामना की जाती है. विद्वान, ज्ञानी और पंडित तिलक लगाए बगैर बाहर नहीं निकलते. कोई केसर का टीका लगाता है तो कोई हल्दी का ! पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा बीएचयू में फिजिक्स के प्रोफेसर रहे डा. मुरलीमनोहर जोशी हमेशा माथे पर गोल टीका लगाए रहते हैं. उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पं. कमलापति त्रिपाठी भी ऐसा टीका लगाया करते थे. किसी का आदर सम्मान करने के लिए उसे तिलक लगाया जाता है.

हमारे यहां राजाओं व सम्राटों का राजतिलक हुआ करता था. भगवान विष्णु के लिए कहा गया है- कस्तूरी तिलकम ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभं!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, लंदन के स्कूल प्रबंधन का कहना है कि वह त्वचा पर किसी चिन्ह या स्किन मार्क की अनुमति नहीं देता. इससे यूनिफार्म कोड का उल्लंघन होता है. जब बच्चे के माता-पिता ने हेडटीचर व स्कूल गवर्नर को तिलक या टीके के बारे में समझाने की कोशिश की तो उन्होंने हिंदू परंपरा को चुनौती दी. 'इनसाइट यूके' ने यह मुद्दा उठाया और कहा कि स्कूल ने समानता कानून या इक्वलिटी एक्ट का उल्लंघन किया है. अभिभावकों ने अपने बच्चे को उस स्कूल से निकाल लिया.' हमने कहा, 'जब विश्व के तमाम देश जंगली थे तब भारत सभ्यता- संस्कृति के सर्वोच्च शिखर पर था. पश्चिमी देशों को तिलक, स्वस्तिक जैसे चिन्ह नापसंद हैं. हमारे सभी साधु संत तिलक लगाते हैं युद्ध के मैदान में जानेवाले पति को राजपूत महिलाएं तिलक लगाकर विदा करती थीं और उनकी विजय की कामना करती थीं. परीक्षा देने जा रहे बच्चे को भी टीका लगाकर व दही खिलाकर भेजा जाता है. तिलक का वैज्ञानिक महत्व यह है कि दोनों भौहों के बीच आज्ञाचक्र होता है. वहां तिलक लगाने से मानसिक ऊर्जा जागृत होती है. इस तरह की समझ की उम्मीद अंग्रेजों से मत कीजिए.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12150 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3		4		5
6		7		■		■	
	■		■	8	■	9	
10		■	11				■
■	■	12			■	13	14
15		■	16		17	■	
	■	18		■	19	20	
21		■	22		■	23	

बाएं से दाएं

1. शेर 3. किसी एक मत सिद्धांत या संप्रदाय का अवलंबन करने वाला (सं.) 6. गंभीर तथा घोर शब्द करना, तुमुल शब्द करना, बादलों का कड़कना 9. सौ का पच्चीसवां भाग, बहुत से, कुछ 10. लहू, खून 11. भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त संख्या 12. पूरब से आने वाली हवा, छोटा गांव 13. हुक्के का दम, फूंक (उर्दू) 15. ध्वनि, आवाज, सार्थक ध्वनि 16. बंदर 18. विवाह, शादी 19. फूल लगना, पुष्पित होना, हवा भरने से मोटा हो जाना 21. जल से रहित भूमि, स्थान, जगह 22. पुरुष, पुरुष जाति का 23. बिना पलक झपकाए एक ही ओर देखना

ऊपर से नीचे

1. लगाम में बांधी जाने वाली रस्सी 2. आवास, मकान 3. निषिद्ध, वर्जित 4. कपड़ा (सं.) 5. मरीज, रोगी (उर्दू) 7. झुंड, बहुत से जीवों का समूह 8. ईश्वर 9. चलाने वाला (सं.) 11. बोझा ढोने की क्रिया या भाव 14. लज्जाजनक 15. कसम, सौगंध, प्रतिज्ञा 17. फटे कपड़े पर फटे हुए स्थान को तागे की बुनावट से ठीक करना (उर्दू) 20. केशलता, बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके

Solution 12149

दं	डा	धि	का	री	■	शो	क
गा	ल	■	या	त	ना	■	ल्ल
■	■	अ	प	ना	प	न	■
को	ला	ह	ल	■	ना	न	स
शि	■	म	ट	की	■	द	म
श	त	क	■	क	म	■	र्थ
■	कि	■	पा	र	द	र्श	क
वि	या	बा	न	■	द	■	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नई योजनाओं का शुभारंभ होगा, सांसारिक सुखों की वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा, व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा, व्यापार में सुधार होगा, वर्ष के अन्त में उतावलीपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, अत्याधिक परिश्रम से मन व्यथित रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम सें मन दुखी होगा, कर्क और सिंह राशि केव्यक्तियों को उतावलेपन में लिये गये निर्णय में सुधार होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्यों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन में सफलता मिलेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों कोसावधानी पूर्वक कार्यों में लगना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, उदारहृदय का परोपकारी होगा. साहित्य एवं कला में विशेष योग्यता रहेगी. एक बार जो निर्णय कर लेगा, उसी पर अटल रहेगा. भाग्यवान एवं सहनशील रहेगा. हर कार्य को दिल से करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

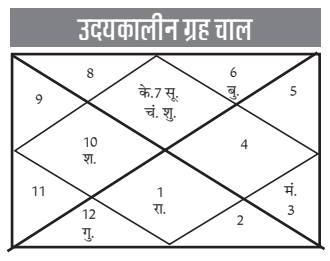

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2082 माघ शुक्ल पंचमीं भृगुवासरे रात 12/9, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे दिन 1/36, परिघ योगे दिन 3/25, वव करणे सू.उ. 6/39, सू.अ. 5/21, चन्द्रचार कुम्भ दिन 7/41 से मीन, पर्व- श्रीवसन्त पंचमीं, तक्षक पूजा, शु.रा. 12, 2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल पंचमीं को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र, हैसियन, खांड में तेजी होगी. आज 12 बजकर 2 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 5484 है.

मेष- नजदीकी लोगों के कारण मन परेशान रहेगा. श्रम एवं प्रयास से महत्वपूर्ण काम बनेगा, शत्रुओं का पराभव होगा, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

वृषभ- पारिवारिक आयोजन सुखद रहेगा, भाग्य से अच्छे अवसर आ सकते हैं, नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, वास्ते सावधानी रखें. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

मिथुन- परिचितों के कारण काम में मुश्किल आयेगी, दुविधा की स्थिति से बाहर निकलें लाभ होगा. शारीरिक सुख एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कर्क- अपनी की गई गलती का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, जीवन में मान-सम्मान बढ़ेगा. सोचे कार्य बनने का योग है, आय से अधिक धन व्यय होगा.

सिंह- कैरिअर में उतार-चढ़ाव बना रहने से चिन्ता बढ़ेगी, जकर्क जायजाद के कार्यों में लाभ होगा, धार्मिक यात्रा होगी, रूके कार्य बनने का योग है, प्रसन्नता रहेगी.

कन्या- बिखरे कार्यों को समेटने में परिवार की अच्छी मदद मिलेगी, नौकरी पदोन्नति एवं स्थानांतरण की समस्या का समाधान होगा.

तुला- दुविधा की स्थिति में वृश्चिके बढ़ने में मुश्किल हो सकती है, कार्य विस्तार की रूपरेखा बनेगी, आध्यात्मिक एवं रचनात्मक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृश्चिक- अपने रिश्तों को थोड़ा वक्त दें, राह की उलझन दूर होगी, रक्त विकार उदर विकार से बचें, खानपान पर संयम रखें, बाहरी व्यक्ति पर भरोसा न करें.

धनु- मानसिक तनाव के चलते अशांति बनी रहेगी, व्यापारिक सौदे लाभदायी हो सकते हैं. परिश्रम की अधिकता रहेगी, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

मकर- न चाहते हुये भी समझौता करना पड़ सकता है, कानूनी मामलों में दूसरों की सलाह से वृश्चिके बढ़ें. न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी.

कुम्भ- दूसरों की सलाह से वृश्चिके बढ़ें, सफलता मिलेगी, शिक्षा संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रु वर्ग पर विजय प्राप्त होगी. भय एवं तनाव दूर होगा.

मीन- परिणय की चर्चाओं में सफलता मिल सकती है, बिगड़े कार्य को पूरा करने में परेशानी होगी, जोखिम के कार्यों में विशेष सावधानी रखें, अत्यन्त व्यस्तता रहेगी.

SUDOKU 7282

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7281

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1